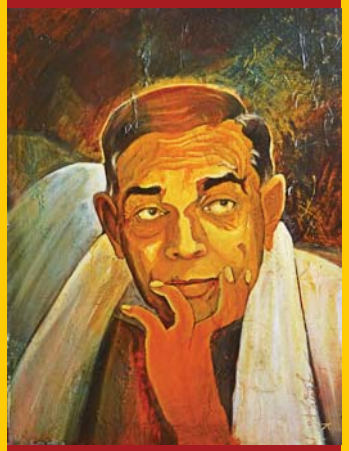

(23-9-1908 – 24-4-1974)

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध।

– परशुराम की प्रतीक्षा

संस्कृति के चार अध्याय

कलाकार मनजीत सिंह द्वारा

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की प्रमुख रचनाओं पर आधारित कलाकृतियाँ

परशुराम की प्रतीक्षा

समीक्षा

चित्रकार का साहित्य से जुड़ना एक शुभ संदेश है। हिन्दी साहित्य पर रचित श्री मनजीत सिंह की कलाकृतियों से हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठा बढ़ी है। इनकी कलाकृतियों से भारतीय संस्कृति को और करीब से समझा जा सकता है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास व श्री मनजीत सिंह के आपसी समन्वय से यह कार्य सम्भव हो सका। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसा रचनात्मक कार्य अनवरत जारी रहेगा और समाज एवं सरकार ऐसे महत्वपूर्ण कार्य को उचित मंच प्रदान करेगी।

– केदार नाथ सिंह
राष्ट्रकवि दिनकर के सुपुत्र

चित्रों के द्वारा कविताओं की अभिव्यक्ति ने सुकून दिया। आधुनिक चित्रावली की खूबियां हैं कलाकृतियों में। चित्र जितने ऐब्स्ट्रैक्ट हैं उसके बावजूद मुखर हैं। जो काव्य पंक्तियाँ चयनित की गई हैं, उनकी अभिव्यक्ति में सर्व समर्थ भी कह सकते हैं। सम्प्रेषणीय और सीधे हमारे भीतर उन पंक्तियों में अन्तर्निहित भावों को प्रकट करते हैं। इसके बावजूद स्थूल नहीं। हर जगह चित्रकार की सूक्ष्म दृष्टि व पंक्तियों को कहीं गहरे अनुभव कर किया गया चित्रांकन। काव्य पंक्तियों के जरिये चित्रों तक पहुँचाना और चित्रों के द्वारा काव्य पंक्तियों तक पहुँचने की अंतरयात्रा काफी कुछ जगाती है। कविताओं और चित्रों की ये जुगलबंदी मर्मस्पर्शी है! एक बात और स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी और दिनकर जी का भावग्रहण एक कुशल चित्रकार के लिए इनसे सुन्दर विषय और हो भी क्या सकता है। राष्ट्रकवि 'दिनकर' स्मृति न्यास और श्री मनजीत सिंह के इस कार्य से सांस्कृतिक भारत निर्माण को बल मिलेगा।

– अरविन्द कुमार सिंह
राष्ट्रकवि दिनकर के पौत्र

ये जानकर मुझे सुखद अनुभूति हुई कि हम दोनों साहित्यिक विषयों पर अपनी-अपनी विधाओं - रंगमंच और फाईन आर्ट - में कार्य कर रहे हैं। श्री मनजीत सिंह ने स्वामी विवेकानंद कला श्रृंखला के लिए गहन अध्ययन करके मनोहारी कृतियों को पेश किया। वहीं मुंशी प्रेमचंद की कहानियों को पढ़कर कलाकार मन द्रवित हो उठा। कलाकार महान विभूति पर सृजन करने से पहले उसके जीवन का खुद आत्मसात करता है और यही इन कालकृतियों की विशिष्टता है। इनके इस अनुपम कार्य को जन-जन तक पहुंचाना सभी का कर्तव्य है। राष्ट्रकवि 'दिनकर' स्मृति न्यास ऐसा मंच है जिनपर स्वामी विवेकानदं, मुंशी प्रेमचंद एवं राष्ट्रकवि दिनकर की रचनाओं पर नाट्य मंचन एवं कलाकृतियों का प्रदर्शन साथ-साथ हो रहा है।

– मुजीब खान
सुप्रसिद्ध रंगकर्मी, मुम्बई

मातृभाषा हिन्दी को समर्पित रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, संस्कृति के चार अध्याय, बापू, चिदम्बरा, यशोधरा जैसी प्रमुख रचनाओं पर आधारित कलाकृतियों को देखकर मुझे सुखद अनुभूति हुई। स्वामी विवेकानंद के जीवन पर कलाकार द्वारा बनाई गई कलाकृतियाँ अद्भुत एवं प्रेरणादायी हैं, जो मेरी जानकारी में विश्व में किसी कलाकार के द्वारा किया गया पहला और सर्वोत्तम कार्य है। मुझे श्री मनजीत सिंह के स्टूडियो में जाने का अवसर मिला, जहाँ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर 125 कलाकृतियों का निर्माण हो रहा है, जिसे महात्मा गांधी की 125वीं वर्षगांठ पर 2019 में प्रदर्शित किया जाना है। स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, मुंशी प्रेमचंद, राष्ट्रकवि दिनकर, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानदंन पंत जैसे यशस्वी महापुरूषों के विचारों को कलाकृति के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का श्री मनजीत सिंह ने संकल्प लिया है। इस संकल्प को पूरा करने में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास हमेशा सहयोगी रहेगा।

– नीरज कुमार, अध्यक्ष
राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, नई दिल्ली

नारी का शील हुआ खंडित, कौमार्य गिरा लोहूलुहान
कामार्त्त दानवों के नीचे जगदंबा कांप उठी थर-थर

"बापू"– दिनकर

रामकृष्ण परमहंस द्वारा स्वामी विवेकानंद में देवत्व की अनुभूति।

– कर्मठ वेदांत, संस्कृति के चार अध्याय

जो नर आत्म-दान से अपना जीवन-घट भरता है।
वही मृत्यु के मुख में भी पड़कर न कभी मरता है।

– "रश्मिरथी"

त्वमसि निरंजन 'आप स्वयं भगवान हो'।

– संस्कृति के चार अध्याय

पूरब और पश्चिम में अध्यात्म व विज्ञान का समन्वय।

– संस्कृति के चार अध्याय

कर्मठ वेदांत स्वामी विवेकानंद का भारत भ्रमण।

– संस्कृति के चार अध्याय

नरेन का अध्यात्म और शौर्य।

– संस्कृति के चार अध्याय

धार्मिक स्थलों में दलितों के प्रवेश के लिए स्वामी विवेकानंद का संघर्ष।

– संस्कृति के चार अध्याय

जीव सेवा शिव सेवा।

– संस्कृति के चार अध्याय

यह नहीं शांति की गुफा, युद्ध है, रण है
तप नहीं, आज केवल तलवार शरण है।

– परशुराम की प्रतीक्षा

जाति जाति रटते, जिनकी पूंजी केवल पाषंड
मैं क्या जानूं जाति? जाति हैं ये मेरे भुजदंड।

– रश्मिरथी

गुरू शिष्य परंपरा।

– रश्मिरथी

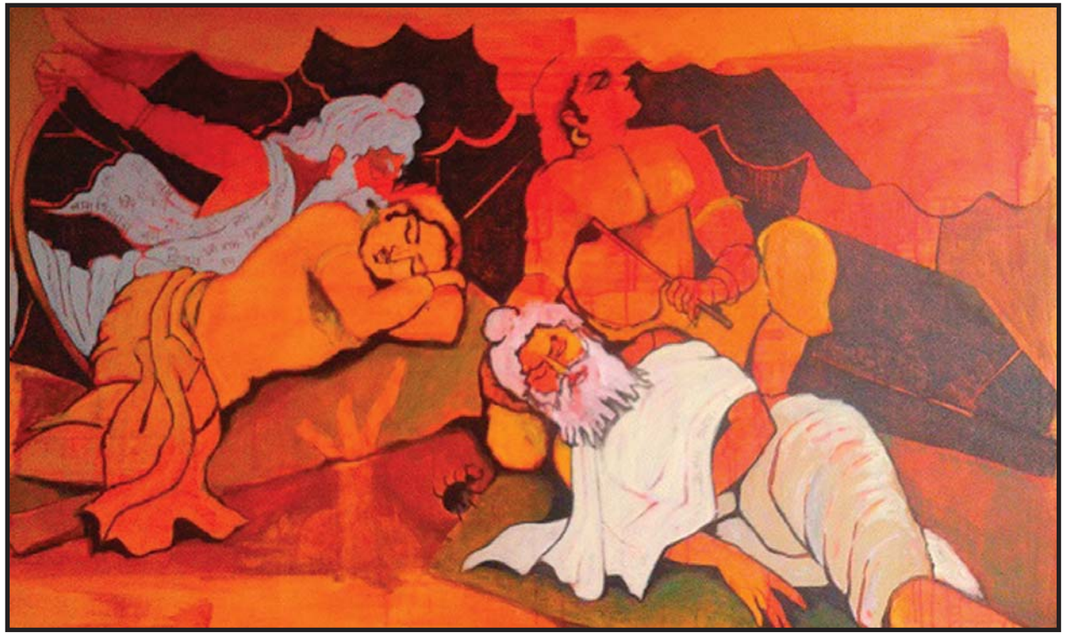

ताण्डवी तेज फिर से हुंकार उठा है,
लोहित में था जो गिरा, कुठार उठा है।

– परशुराम की प्रतीक्षा

जिधर जिधर उर्वशी घूमती, देव उधर चलते हैं,
तनिक श्रांत यदि हुई, व्यजन पल्लव दल से झलते हैं।

– उर्वशी

नहीं पुष्प ही अलम, वहाँ फल भी जनना होता है,
जो भी करती प्रेम, उसे माता बनना होता है।

- उर्वशी

मनजीत सिंह
(जुलाई 1955)

शिक्षा - समाजशास्त्र में परास्नातक डिग्री, प्रबंधन में डिग्री, मानव संसाधन में डिप्लोमा

कलाशिक्षिका - कु. सावित्री श्रीवास्तव

अन्य रुचियाँ - गायन, कविता व कहानी लेखन

पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) द्वारा आयोजित कार्टून प्रतियोगिता 2011 व काव्यपाठ प्रतियोगिता 2011 व 2012 में दिल्ली राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार

एकल प्रदर्शनी

2005 सिक्ख कौम के रक्षक, दशमेश आर्ट गैलरी, दिल्ली

2006 योग और भारतीय पुनर्जागरण, iitf प्रगति मैदान, नई दिल्ली

2008 कामायनी-एक निसर्ग कन्या, प्रेस क्लब गैलरी, दिल्ली

2008 कामायनी के रंग-चिंतन से आनंद, इंडिया हैबीटेट सैन्टर, लोदी रोड, नई दिल्ली

2008 फूल वालों की सैर, कुतुबमीनार, दिल्ली

2009 उर्वशी, इंडिया हैबीटेट सैन्टर, लोदी रोड, नई दिल्ली

2010 अनुराग-विराग, ललित कला अकादमी, दिल्ली

2011 राष्ट्रकवि दिनकर स्मृति न्यास द्वारा रश्मिरथी महोत्सव, मावलंकर हॉल, नई दिल्ली

2012 हिन्दी काव्य के बसंत, इंडिया हैबिटेट सैन्टर, लोदी रोड, नई दिल्ली

2012 राष्ट्रकवि दिनकर स्मृति न्यास द्वारा भारतीय शिक्षा-संस्कृति महोत्सव, रामलीला मैदान, दिल्ली

2013 राष्ट्रकवि दिनकर स्मृति न्यास द्वारा मुंशी प्रेमचंद मावलंकर हॉल, नई दिल्ली

2013 न्यास द्वारा स्वामी विवेकानंद श्रृंखला, भारत महोत्सव, अहमदाबाद, गुजरात

2014 न्यास द्वारा स्वामी विवेकानंद श्रृंखला, भारतीय शिक्षा संस्कृति महोत्सव, खेतड़ी, राजस्थान

2015 मिट्टी की महक-2, हिन्दी भवन, दिल्ली

सामूहिक प्रदर्शनी

2008 विजुअल आर्टगैलरी, इंडिया हैबिटेट सैन्टर, लोदी रोड, दिल्ली

2008 अर्पना आर्टगैलरी, दिल्ली

2009 आइफैक्स आर्टगैलरी, दिल्ली

2010 श्रीयश आर्ट गैलरी दिल्ली

2011 श्रीयश आर्ट गैलरी दिल्ली

2012 मुलकराज आनंद सैन्टर, हौजखास, दिल्ली

2013 श्रीयश आर्ट गैलरी, दिल्ली

2014 विजुअल आर्टगैलरी, इंडिया हैबिटेट सैन्टर, लोदी रोड, दिल्ली

अन्य गतिविधियां

1) दिल्ली राज्य स्तर की चित्रकला प्रतियोगिताओं में निर्णायक

2) भारत सरकार के उद्यमों में चित्रकला प्रतियोगिताओं में निर्णायक

3) युवाओं के लिए ग्रीष्मकालीन पेंटिंग वर्कशाप का आयोजन

4) नराकास द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में निर्णायक

5) पुनर्स्थापित स्लम क्षेत्र के बच्चों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

6) पुनर्स्थापित स्लम क्षेत्र के बच्चों में स्वास्थ्य व स्वच्छता जागरूकता शिविरों का आयोजन

7) गरीबी व असमर्थता के कारण पढ़ाई छोड़ चुके बच्चों को स्कूलों में पुनर्प्रवेश दिलवाने के लिए अभियान

8) वार्षिक वृक्षारोपण अभियान चलाना।

याचना नहीं, अब रण होगा।

– रश्मिरथी

प्रकाशक:
राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास
206, द्वितीय तल, विराट भवन, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
फोन: +91-11-45564498, **टैलीफैक्स**: +91-11-47027661
ईमेल: dinkarsmriti@yahoo.co.in

मनजीत सिंह, कलारथी स्टूडियो
ए–292, डबल स्टोरी, कालकाजी, नई दिल्ली–110019
फोन: +91-11-26221285
मोबाईल: +91-9873918532
ईमेल: manjit2255@gmail.com